



- भाषा की बात

7. 'लोक' शब्द में कुछ जोड़कर जितने शब्द तुम्हें सूझें, उनकी सूची बनाओ। इन शब्दों को ध्यान से देखो और समझो कि उनमें अर्थ की दृष्टि से क्या समानता है। इन शब्दों से वाक्य भी बनाओ। जैसे - लोककला।

उत्तर:- लोकप्रिय - मुंबई सिनेमाजगत से जुड़ी हस्तियों के लिए लोकप्रिय है।

लोकमंच - लोकमंच कलाकारों को अपनी कला दिखाने के लिए उपयुक्त माध्यम है।

लोकवादय - लोकवाद्यों की महत्ता अब कम होती जा रही है।

लोकहित - नेताओं को लोकहितों को ध्यान में रखकर योजनाएँ बनानी चाहिए।

लोकतंत्र - भारत के अलावा भी कई अन्य देशों में लोकतंत्र है।

8. 'बारहमासा' गीत में साल के बारह महीनों का वर्णन होता है। नीचे विभिन्न अंकों से जुड़े कुछ शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़ो और अनुमान लगाओ कि इनका क्या अर्थ है और वह अर्थ क्यों है। इस सूची में तुम अपने मन से सोचकर भी कुछ शब्द जोड़ सकते हो -

इकतारा, सरपंच, चारपाई, सप्तर्षि, अठन्नी, तिराहा, दोपहर, छमाही नवरात्र।

उत्तर:- इकतारा - एक तार से बजने वाला वाद्य

सरपंच - पंचों का प्रमुख

चारपाई - चार पैरों वाली

सप्तर्षि - सात ऋषियों का समूह

अठन्नी - पचास पैसे का सिक्का

तिराहा - तीन रास्ते जहाँ मिलते हो

दोपहर - जब दिन के दो पहर मिलते हो

छमाही - छः महीने में होनेवाला

नवरात्र - नौ रातों का समूह

9. को, में, से आदि वाक्य में संज्ञा का दूसरे शब्दों के साथ संबंध दर्शाते हैं। पिछले पाठ (झाँसी की रानी) में तुमने का के बारे में जाना। नीचे 'मंजरी जोशी' की पुस्तक 'भारतीय संगीत की परंपरा' से भारत के एक लोकवाद्य का वर्णन दिया गया है। इसे पढ़ो और रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो -
तुरही भारत के कई प्रांतों में प्रचलित है। यह दिखनेअंग्रेजी के एस या सी अक्षर.....तरह होती है।
भारत.....विभिन्न प्रांतों में पीतल या काँसे.....बना यह वाद्य अलग-अलग नामों.....जाना जाता है। धातु की नली.....घुमाकर एस.....आकार इस तरह दिया जाता है कि उसका एक सिरा संकरा रहे और दूसरा सिरा घंटीनुमा चौड़ा रहे। फूँक मारने.....एक छोटी नली अलग.....जोड़ी जाती है। राजस्थान.....इसे बर्गू कहते हैं। उत्तर प्रदेश.....यह तूरी मध्य प्रदेश और गुजरात.....रणसिंघा और हिमाचल प्रदेश..... नरसिंघा.....नाम से जानी जाती है। राजस्थान और गुजरात में इसे काकड़सिंघी भी कहते हैं।

उत्तर:- तुरही भारत के कई प्रांतों में प्रचलित है। यह दिखने में अंग्रेजी के एस या सी अक्षर की तरह होती है। भारत के विभिन्न प्रांतों में पीतल या काँसे से बना यह वाद्य अलग-अलग नामों से जाना जाता है। धातु की नली को घुमाकर एस का आकार इस तरह दिया जाता है कि उसका एक सिरा संकरा रहे और दूसरा सिरा घंटीनुमा चौड़ा रहे। फूँक मारने पर एक छोटी नली अलग से जोड़ी जाती है। राजस्थान में इसे बर्गू कहते हैं। उत्तर प्रदेश में यह तूरी मध्यप्रदेश और गुजरात में रणसिंघा और हिमाचलप्रदेश में नरसिंघा के नाम से जानी जाती है। राजस्थान और गुजरात में इसे काकड़सिंघी भी कहते हैं।

